भगवत् कृपा

स्वामी नारायण

साकार प्रगट ब्रह्म को जो पहचाने, वो परम् को पाये

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली द्विमासिक सत्संग पत्रिका

निजात्मानं ब्रह्मरूपं देहत्रयविलक्षणम् । विभाव्य तेन कर्तव्या भक्तिः कृष्णस्य सर्वदा ॥ शिक्षापत्री, ११५

वर्ष 40 अंक : 3 | 29.5.2017 सोमवार (मई - जून) | वार्षिक शुल्क : ₹ 111.00

गुरुहरि योगीजी महाराज के 125वें प्राकट्य पर्व पर...

अहो ! **23 मई**... परम साधुता की मूर्ति **गुरुहरि योगीजी महाराज की 125वीं जन्मजयंती !** उनका जीवन और जीवनध्येय तो केवल जीव का कल्याण करना ही था। संपूर्ण विश्व को उन्होंने अपना आत्मीय माना। उनकी एक ही भावना थी कि उनके संपर्क में आया जीव किस प्रकार अक्षरधामरूप होकर जीतेजी ही परब्रह्म की मूर्ति का सुख लेता हो जाए।

गुरुहरि पप्पाजी तो अकसर कहते–

योगीजी महाराज यानि कल्पना से परे का भव्यातिभव्य स्वरूप !

जो भक्तों के अनुरागी थे, लेकिन प्रीति सिर्फ भगवान से थी। नम्रता और सरलता का मूर्तस्वरूप थे, लेकिन चैतन्यों की घड़ाई करने वाले सच्चे गुरु भी थे। करोड़ों माँओं की ममता को भी फीका कर दें, ऐसे प्रेमाल हृदय थे। सभी कार्यों में निपुण और सामर्थ्यवान थे, लेकिन एक साधक की अदा से वे जाग्रत रहे और प्रभु के सिवा अन्य कहीं बंधे ही नहीं।

गुरुहरि योगीजी महाराज के निम्न प्रसंग, उनके दिव्यतायुक्त, निराले व अनोखे व्यक्तित्व को चरितार्थ करते हैं–

* एक बार गुरुहरि योगीजी महाराज के साथ युवक विचरण में गए थे। किसी हरिभक्त के घर रात को ठहरना था। हरिभक्त खूब महिमा और माहात्म्य वाले थे। उन्होंने सभी के विश्राम हेतु गद्दे-तकिए इत्यादि की बहुत अच्छी व्यवस्था की थी। परंतु, गुरुहरि योगीजी महाराज ने युवकों को दरी या टाट बिछा कर सोने का नियम दिया था। सो, युवकों ने गद्दे तै करके एक ओर रख दिए। हरिभक्त वहाँ आए और उन्होंने देखा कि युवक टाट पर सो रहे हैं, तो उन्होंने सभी को आग्रह करके गद्दों पर ही सुलाया। युवक उनका भाव देख कर झुक गए थे। अगले दिन सुबह सभी योगीजी महाराज का दर्शन करने के लिए गए।

बापा ने युवकों से पूछा– *नींद आ गई थी ? किस पर सोए थे ?*

एक युवक ने कहा– *बापा, पहले तो टाट पर सो रहे थे, लेकिन हरिभक्त वहाँ आए और उन्होंने खूब ज़िद्द की, सो उनके आग्रह से गद्दे पर सो गए।*

बापा ने कहा– *क्या वे हरिभक्त सारी रात वहीं बैठे रहे थे ? उनके चले जाने के बाद गद्दे वापिस रख*

देने चाहिए थे। गुरु, हमें तो नियम पालन ज़रूर करना चाहिए, तभी शास्त्रीजी महाराज राज़ी होंगे।

इस प्रकार, कई बार कठोर रूख अपना कर भी बापा ने भगवान भजने की राह पर चलते युवकों को, सत्पुरुष को राज़ी करने की चाबी बताई।

* गर्मी की छुट्टियों में युवक गुरुहरि योगीजी महाराज के पास रहने के लिए आ जाते थे। एक बार अफ्रीका से कई युवक सेवा के लिए आए थे। वे तो अच्छी शर्ट पहनते थे। भारत (यहाँ) के एक युवक को वैसी शर्ट पहनने का खूब मन हुआ। उसने अपने पिता से पैसे मंगवाने के लिए पत्र लिखा। पिता का उत्तर आया– *'बेटा, हमें ऐसी कमीज़ पहनना शोभा नहीं देता और बापा की सेवा में तो सादगी से रहना चाहिए।'* यह पढ़ कर युवक उदास हो गया, पर उसकी तीव्र इच्छा देख कर अंतर्यामी बापा ने पूछा– *'क्यों ढीले हो ?'* युवक ने सारी बात कही। बापा ने कहा– *बापुजी को पत्र में लिखो कि बापा ने मुझे कहा है।* बापा की आज्ञा से लिखने पर युवक को तुरंत मनीऑर्डर मिल गया।

बापा ने उस युवक का शौक़ और संकल्प पूरा करके, उसे प्रीति से बांध लिया। अपने निरपेक्ष प्रेम के प्रवाह में युवकों को सराबोर करने से बापा चूके नहीं। यह था प्रभुधारक बापा का वात्सल्यभाव! कितने ही युवकों ने बापा के प्रति अतिशय लगाव के वश साधु की दीक्षा लेकर जीवन समर्पित कर दिया। पढ़े-लिखे युवकों को अपने वात्सल्य में डूबो कर बापा ने साधुता के अंलकारों से उन्हें सुसज्जित कर दिया!

यूं, **गुरुहरि योगीजी महाराज** ने प्रसंगों पर तो नित्य नवीन सूझ दी ही; साथ ही अपनी परावाणी के झरने से सभी के अंतर तृप्त किए। आइए, उनकी **125 वीं प्राकट्य तिथि** के पावन पर्व पर निम्न आशीर्वाद पढ़ कर धन्यता का अनुभव करें...

प.पू. शास्त्रीजी महाराज कई बार कहते –

जब तक अपना गुरु स्वयं नहीं बनेंगे, तब तक कल्याण नहीं होगा।

सभी जीव प्राणीमात्र को ज्ञान तो है ही। जानवर भी उत्तम प्रकार का हरा - ताज़ा चारा इत्यादि खाते हैं; सूखी - गंदी घास नहीं खाते। इसी प्रकार पानी भी स्वच्छ पीते हैं, अस्वच्छ पानी या घास को तो छूते भी नहीं। यह ज्ञान पशुओं में भी है।

मनुष्य में तो इससे विशेष ज्ञान है; वह क्या ? तो, अपने कल्याण के लिए उपाय करना - वह। यदि मनुष्य स्वयं का गुरु बने और इंद्रियों - अंतःकरण को अपने वश में वर्ताए तो सुखी हो जाए।

कल्याण की चाहना से, हमें मिले सत्पुरुष कौन हैं, वह माहात्म्य समझें और उनके द्वारा परमात्मा के स्वरूप का ज्ञान प्राप्त करें, तो हमारा कल्याण अवश्य हो जाए। परंतु, जब तक ऐसा ज्ञान नहीं होता, तब तक सत्पुरुष के प्रति मनुष्यभाव आ जाता है और कल्याण के मार्ग में विघ्न आता है। कितनी भी भक्ति-सेवा की हो, लेकिन मनुष्यभाव आने से की हुई सेवा पर पानी फिर जाता है...

संत के संबंध वाले भक्तों से आत्मबुद्धि रख कर भजन करें, तो कैसा भी माहौल बना हो, पर विघ्न बाधारूप नहीं होंगे। मन की निवृत्ति से और सत्संग में आत्मबुद्धि से ही गृहस्थ के अंतर में भी अखंड शांति रहती है। आज्ञा के विरूद्ध कार्य करने से ही विघ्न और विपरीत परिस्थिति उत्पन्न होती है। अतः पंचप्रण का पालन करने में लापरवाह नहीं होना चाहिए।

...जैसे बिना किसी परिश्रम के पारसमणि प्राप्त हो, उसी प्रकार हमें भगवान मिले हैं। ऐसा क्या साधन हमने किया ? केवल दया। क्रियासाध्य या कृपासाध्य ? कई संत कहें – 'क्रियासाध्य'। कई कहते हैं– 'क्रियासाध्य' न

कहा जाए। हमने ऐसा क्या साधन किया कि जिससे महाराज क्रियासाध्य कहे जाएं ? वे तो कृपासाध्य हैं। सभी साधन सुषुप्ति में लीन हो जाते हैं। भगवान अपने प्रेमी भक्तों के मनोरथ पूरे करने तथा अनेक जीवों का कल्याण करने के लिए इस पृथ्वी पर पधारे हैं (वच. कारियाणी 5)। गन्ने की खेती के साथ अरंडी की फसल भी हो जाती है। हमारे ऐसे भाग्य नहीं, लेकिन महाराज के संबंध में आने के बाद भी वासना रह गई होगी, इसलिए दोबारा जन्म लेना पड़ा। मानो कूड़ा इकट्ठा करने के मूल सोना मिला है। इसी प्रकार दृष्टि में आए और मोक्ष मिल गया...

❁❁❁

प्रगट ब्रह्मस्वरूप हरिप्रसादस्वामिजी के प्राकट्य दिन की बेला...

अत्यंत हर्ष का अवसर है कि अबकी बार **गुरुहरि योगीजी महाराज** की **प्राकट्य तिथि** और **प्रगट ब्रह्मस्वरूप हरिप्रसादस्वामिजी** का **प्राकट्य दिन 23 मई** के पावन दिन पर एक साथ आए ! गुरुहरि योगीजी महाराज से परब्रह्म की भक्ति की कला सीख कर, संबंध में आए सभी का उसी रीति-नीति से पोषण करने वाले प.पू. स्वामिजी बचपन से ही अध्यात्म के शिखर पर थे। उनकी किशोरावस्था का निम्न प्रसंग प्रतीति कराता है कि साधकों को सही दिशा दिखाने वाले वे सनातन दीपस्तंभ के समान हैं...

पूर्वाश्रम में प.पू. स्वामिजी के परिवार का हरिद्वार के एक महामंडळेश्वर से गाढ़ संबंध था। प.पू. स्वामिजी की आयु सात वर्ष की होगी, जब वे महामंडळेश्वर आसोज प.पू. स्वामिजी के गांव-घर पधारे थे। कथा करते हुए वे बार-बार कहते होंगे– *'मैंने ऐसा किया'* और *'मैं ऐसा हूँ'* इत्यादि... यह सुन कर छोटी उम्र के पू. प्रभुदासभाई अर्थात् प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी सहज ही बोल उठे– *'स्वामिजी, आप ठीक नहीं बोल रहे।'* बालक के अविवेक को देख कर पिताश्री गोपालदासभाई ने उन्हें तब एक थप्पड़ भी मार दिया।

देखा जाए तो जिस आयु में यह समझ नहीं होती कि शब्दों का प्रयोग किस प्रकार और कहाँ करना चाहिए, उस आयु में प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी ने 'मैं' में छिपे अहंकार को पहचान लिया। सच, जो स्वयं 'स्वरहित' होगा, वही भीतर में वास करते सूक्ष्म अंतर्शत्रुओं को पहचान सकता है। इसीलिए प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी के मुख से निकलता एक-एक शब्द साधकों के अंतर को झंझोड़ कर, हठ, मान, ईर्ष्या, मद, मत्सर, आशा, तृष्णा, वासना, महत्त्वाकांक्षा के जंजाल से निकालने में संजीवनी बूटी का कार्य करता है। **प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी** के **84वें प्राकट्य दिन** की शुभ बेला पर उनके निम्न वचनों की गहराई समझ कर, प्रभु का बालक बनने की सही दिशा पकड़ लें...

मैं तेरा बालक ! कितना मीठा, मर्मयुक्त एवं प्रेमभरा यह शब्द है। पर, प्रभु की दृष्टि से ज़रा सोचें। जगत में तो बालक की कक्षा और उसकी परिभाषा बदलती रहती है। बचपन में 'निर्दोष बालक', थोड़ा बड़ा होने पर उस का दिल सिर्फ खेलकूद में ही लगा रहता है और उससे बड़ा होता है तो किशोर, फिर युवक और 'पिता' बन जाता है। तो, इन अवस्थाओं से हम न गुज़रें।

जैसे कि साधु हुए, तो शुरुआत में खूब सरल रहते हैं। पर, किसी कुसंग से मन उछलने लगता है। कुसंग का और थोड़ा अधिक योग होने से मनमुखी जीवन शुरू हो जाता है और फिर... जय स्वामिनारायण ! साधुता का एक भी लक्षण उसमें आता नहीं। यह जो बात करता हूँ, वह मैं सिर्फ 'आध्यात्मिक विवेक' की बात है। तुम्हारे प्रभु का संपूर्ण स्वीकार करने की बात है। भगवान को यदि 'भगवान' न माना जाए, तो कितना बड़ा घाटा है !

भगवान स्वामिनारायण ने वच. ग.प्र. 27, 37, 62 में अपनी सुप्रीमसी का वर्णन किया है। वे प्रभु और प्रभुस्वरूप संत (हमारे) दस इंद्रियों एवं चारों अंतःकरण के प्रकाशक हैं। भगवान अपनी शक्ति से संत को इतना सामर्थ्य देते हैं। इसलिए आध्यात्मिक दुनिया में भगवान और संत हमारे 'माँ-बाप' रूप हैं, जो अनिवार्य हैं। हम जब दिल से मानते ही हैं कि भगवान और संत के द्वारा ही हमारे इंद्रिय-अंतःकरण चेतन हैं। तो इन भगवान और संत की रहमनज़र - कृपादृष्टि यदि हमारे ऊपर से तनिक भी हट जाए, तो क्या दशा होगी ? विचार करना।

1. मनुष्य की आत्मा में सुख, शांति, आनंद, सद् विचार, सद् भावनाएँ – यहाँ तक कि स्थूल रूप से जिन भी विषयों का भोग करता है, वे सब भगवान के आधीन हैं। बुद्धि, शक्ति, समझदारी, गुण, ऐश्वर्य, प्रताप, विवेक सब कुछ इन भगवान से ही प्राप्त होते हैं।

   और

2. भगवान स्वामिनारायण ने कहा – *'मैं ही मेरी महिमा के पार को नहीं पा सकता।'*

हम यदि इन दो बातों पर सोचें, तो 'ज़ीरो' हो जाएँगे। प्रतिदिन एक ही प्रार्थना होगी – *'मुझे आपका बालक बनाना।'*

भगवान स्वामिनारायण ने वचनामृत में कहा है –

'यदि किसी निमित्त धरती पर अवतरित होना होगा, तो भक्तों के बीच आना है और उनकी सेवा करनी है।
मेरा बड़प्पन तो भक्त का भक्त होने में समाविष्ट है।'

जब हमारे सनातन माँ-बाप ऐसी कक्षा पर रंक होकर वर्तते हैं, ऐसी भक्ति का दर्शन कराते हैं, तो हम किस खेत की मूली ? साकार ब्रह्म से लेकर अब तक अवतरित – काकाजी तक के सभी भगवत्स्वरूप हर एक की चरणधूलि बन कर - दास होकर वर्ते हैं।

इस पर सोचें तो इतना मन तो हो जाए कि *'बालक बन जाना है।'*

बालक का लक्षण क्या ?

वह हल्के फूल के समान रहे, अपनी मस्ती में रहे, निश्चिंत ही रहे और भगवान से ही प्रार्थना करे।
उसे कुछ ज़रूरत हो, तो भगवान उसकी सुविधा कर देते ही हैं।
वह हमेशा प्रभु की मरज़ी अनुसार ही वर्ते।
उसे ख्याल रहता है कि मेरी दस इंद्रिय और चार अंतःकरण के प्रेरक-प्रकाशक भगवान हैं।

❁❁❁

गुरुहरि काकाजी महाराज की 99वीं जन्मजयंती पर...

वर्षों पहले गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज ने सारंगपुर के मंदिर में आचार्य महाराज के समक्ष भविष्य की झांकी कराते हुए कहा था –

'अक्षरपुरुषोत्तम की निष्ठा का प्रवर्तन करने वाला पृथ्वी पर प्रगट हो चुका है।'

वे अन्य कोई नहीं, हम सभी के प्राण पुरुष एवं गुणातीत समाज के आद्य सर्जक गुरुहरि काकाजी महाराज थे और... अत्यंत हर्ष का अवसर है कि **12 जून** को जब गुरुवर्य योगीजी महाराज के शब्दों में – 'निर्दोषबुद्धि के राजा' और मुक्तों के 'सुहृद् क्षितिज' **गुरुहरि काकाजी महाराज का 99वाँ प्राकट्य पर्व** दस्तक दे रहा है, तब उनके शताब्दी वर्ष का शुभारंभ भी हो रहा है...

बचपन से ही एक अनोखी प्रतिभा, अद्भुत शक्ति, अटूट आत्मविश्वास, विचक्षण बुद्धिमत्ता, सर्वोपरि निष्ठा, आकाश को भी छूने की महत्त्वाकांक्षा, साहसिक वृत्ति और संबंध में आए सभी के सहिष्णु बन कर अपनत्व

BJSM-2017 125 80 50 DELHI

देने जैसे दैविक गुणों से युक्त गुरुहरि काकाजी अखंड वर्तमान में जिए और अन्यों को वैसा ही जीने के लिए प्रेरित किया। कई बार किसी प्रवृत्ति में वे खूब ओतप्रोत दिखाई दिए, लेकिन सही अर्थ में तो वे उससे अलिप्त ही प्रतीत हुए। उनके प्रशांत मन और चित्त की स्थितप्रज्ञता का सहज दर्शन होता था। दूसरी बात, वे स्वयं तो हर क्षण प्रभु में निमग्न रहे ही और अपने आश्रितों को भी वैसी ही कार्यशैली अपनाने की सूझ दी। जैसे कि कभी कहीं बाहर जाते हुए उनकी सेवा में रहता सेवक यदि कुछ वस्तु लेना भूल जाता, तो बाहर निकलते हुए दरवाज़े पर अपने जूते पहनते हुए उसे याद दिलाते और... सेवक को ख्याल पड़ता कि वाक़ई वह फलां वस्तु लेना भूल गया था। तब वे कहते – *देखा, कॉन्शन्स स्पीक्स (अंतरात्मा बोलती है)...* और भविष्य के लिए सीख देते हुए कहते – *'सर्वारंभ परित्यागी...'* प्रत्येक कार्य की शुरुआत नवकार मंत्र याद करके करो। सब कुछ प्रभु को याद करके यदि करोगे, तो भूल नहीं होगी।

वचनामृत एवं स्वामी की बातों के आधार पर मानवस्वरूप में भगवान के प्रगटीकरण की बातों द्वारा सभी के जीव में 'प्रगट प्रभु' की निष्ठा दृढ़ करा कर, मानवजीवन का लक्ष्य स्पष्ट किया। सुनने वाला श्रद्धावान मुमुक्षु शायद थक जाता, लेकिन अपने अमृतवचनों के झरने में भिगोने वाले गुरुहरि काकाजी ने कभी थकान महसूस नहीं की। बल्कि मुक्तों के अंतर प्रभु से भरने के लिए, अपनी देह का अंत तक अनादर किया। दरअसल, उन्हें यह रहस्य ज्ञात था कि भगवान की महिमा की बातें करने से जीव जितना शुद्ध होता है, वैसा अन्य किसी साधन से नहीं होता। कहा जाता है कि शब्द से देह बनती है, इसीलिए प्रगट की माहात्म्य वार्ता निरंतर करके उन्होंने मुमुक्षुओं का ढाँचा ही प्रभुमय बना दिया। इससे भी अधिक, स्वयं 'स्वरूपयोग' करके वे हमेशा प्रसन्नचित्त रहे और सहजता से सभी को 'स्वरूपयोग' करवा कर शाश्वत् शांति-सुख प्रदान किया। वे अकसर कहते – *सब कुछ धुन करेगी...* अर्थात् **प्रत्येक समस्या का हल कोई जादू-टोना, तंत्र-मंत्र, कर्मकांड नहीं, बल्कि सर्वोपरि जीवंत मंत्र 'स्वामिनारायण' का रटण है।** इसीलिए गुरुहरि काकाजी को 'जपयज्ञ का मूर्तिमान स्वरूप' कहा जाता है। गुरुहरि पप्पाजी तो कई बार कहते – 'काका कॉन्शियसनेस यानि सहजानंदी कॉन्शियसनेस...' तो, साक्षात् श्रीजी महाराज को अखंड धारी गुणातीत विभूति गुरुहरि काकाजी के शताब्दी वर्ष पर अंतर से प्रार्थना करें कि हे काकाजी! आपके सिद्धातों, आपकी धुन के रणकार और सिंहगर्जना की भाँति आपकी परावाणी के रूप में हमें जो अक्षरधाम की अलौकिक संपत्ति प्राप्त हुई है, उसे हम न केवल संभालें, बल्कि उसे व्यापक करने हेतु हमारी सतत चेष्टा रहे। सो, आओ गुरुहरि काकाजी के निम्न कृपाप्रसाद का लाभ लें...

'निर्दोषबुद्धि' अर्थात् अक्षरधाम में जो हैं, वे ही मुझे (धरती पर) साक्षात् रूबरू मिले हैं। यदि ऐसा मानेंगे तो उनकी (सत्पुरुष की) सभी क्रियाएँ - सब कुछ दिव्य मानना पड़ेगा और तब उनकी सर्वोपरि सत्ता – जो कि काल, कर्म, प्रकृति के नियंता के रूप में कार्य कर रही है, उसे भी इतनी सत्य मान कर स्वीकारना पड़ेगा। मतलब कि उनकी सार्वभौम सत्ता ही सर्वव्यापक रूप से प्रगट होने के कारण अणु - अणु में चल रही है और उनके संबंध वालों में उसी सत्ता का कार्य चल रहा है, यह समझ कर उन्हें भी दिव्य मानना पड़ेगा। वर्ना उनके सर्वोपरि कर्ता होने के भाव का अनादर किया गिना जाए।

वच. प्रथम 27, प्रथम 62 के अनुसार, प्रगट भगवान और उनकी सार्वभौम सत्ता यानि – जो अनंत ऐश्वर्य हो गए, होते हैं और होंगे, वे मुझे मिली इस मूर्ति के द्वारा ही हैं। वह मूर्ति अंतर में अंतर्यामी रूप से, विश्व में सर्वव्यापक रूप से, मुक्तों द्वारा मूर्तिमान रूप से और गुणातीतस्वरूप से अनंत ऐश्वर्य - प्रताप युक्त योगीबापा के दिव्य स्वरूप

में साक्षात् मिली है एवं अणु-अणु में वैसी ही मूर्तिमान कार्य कर रही है।

तो, अब कठिनाई, विक्षेप या बेचैनी में उनका ही बल लेकर, उनकी सत्ता को मान्य रख कर उन्हें प्रार्थना-पुकार करके उनकी प्रेरणा के मुताबिक़ करने के बजाय, अन्य आकार देखें, यह हम उनकी सार्वभौमसत्ता का द्रोह करते हैं। अन्य आधार, साधनों को ध्यान में लेते हुए उसके मुताबिक़ करने लगेंगे, तो समझना हम पतिव्रत धर्म चूक रहे हैं। हमारा मालिक पल-पल मौज़ूद है, हम उनके हैं। इसलिए गीता के–

सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज। अहं त्वां सर्व पापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः॥ (18-66)

और

मन्मना भव मद्भक्तो मद्याजी मां नमस्कुरु। मामेवैष्यसि युक्त्वैवमात्मानं मत्परायणः॥ (9-34)

ये दो श्लोक खूब विचार करना।

प्रथम श्लोक में संपूर्ण शरणागति और दूसरे में शरणागति स्वीकारने के बाद, उनकी सार्वभौमसत्ता को मान्य रखते हुए उनका ही मनन और चिंतन करने का आग्रह है। अंतिम श्लोक के अनुसार तीसरी भूमिका में जहाँ ऐसा साधक और ऐसे सारथी भगवान हैं, वहीं अक्षरधाम प्रगट हो जाता है। तब उसके कर्तव्य का दर्शन करवा कर, उसे निडर व निर्भय बना देंगे।

एकांतिक के प्रसंग से अर्थात् उनकी (सत्पुरुष की) सेवा और समागम से (भगवान का) निरुत्थान निश्चय दृढ़ हो जाकर यह त्वरित ही सिद्ध हो जाए और संत से संबंध वालों में उनकी सर्वव्यापक सत्ता-दिव्य रीति कार्य कर रही है यह महिमा का साक्षात्कार ही अंतिम ज्ञानसमाधि है, इसमें प्रवेश कर जाएं यही अभ्यर्थना।

– गुरुहरि काकाजी महाराज, 1970

❀❀❀

काकाजी ने हमें यह मंदिर बनवा दिया था!

– प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी

'सांकरदा' गाँव – भगवान स्वामिनारायण की महाप्रसादी का तीर्थस्थान – जहाँ श्रीजी महाराज दोनों देश के आचार्यों एवं पाँच सौ परमहंसों के साथ एक रात रूके थे। गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज के 'खैबरघाट' सदृश यह गाँव उनके द्वारा गुरुहरि योगीजी महाराज को उपहार के रूप में दिए सात गाँवों में से एक था। प.पू. योगीबापा यहाँ आकर छः-छः महीने रहते। ऐसे महापवित्र और निर्गुण गाँव के हरिभक्त, जिन्होंने किसी भी प्रकार की मुहब्बत या व्यवहार को आड़े न आने देकर, जिस प्रकार गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज एवं गुरुहरि योगीजी महाराज का खुल्लं-खुल्ला पक्ष रखा था, वैसे ही इन एकनिष्ठ शूरवीर हरिभक्तों ने **प.पू. काकाजी की महिमायुक्त स्वरूपलक्षी बातों एवं गुरुहरि योगीजी महाराज के प्रति प.पू. काकाजी की निष्ठा की मस्ती से प्रभावित होकर**, संतों को गाँव के पुराने मंदिर में ठहराने में पूरी तरह सहयोग दिया। इस प्रकार, गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज के निर्दोषबुद्धि वाले मंडल के अखंड बने रहे भक्तिभाव की प्रतीति भी हुई!

प.पू. योगीजी महाराज के प्रति संतों की अडिग निष्ठा, साधुता और शुद्ध वर्तन को देख कर, थोड़े ही समय में वहाँ के सारे मंडल का संतों के प्रति ऐसा भाव और लगाव हो गया कि उन्होंने गाँव के बाहरी छोर पर, महाप्रसादी की विशाल जगह को मंदिर के लिए अर्पण किया और... सभी के साथ-सहकार से **प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी** की निश्रा में संतों-युवकों ने रात-दिन सतत परिश्रम करके मंदिर के निर्माण का कार्य उठा लिया।

प.पू. काकाजी जैसे कहा करते– *'लक्ष्मीजी तो संतों की दासी हैं'*– मुंबई से वे स्वयं अकसर सांकरदा आते और 'सेवा' लाते रहे। जिन-जिन्होंने प्रेमभाव से छोटी-सी भी सेवा दी, उनसे आत्मीयता का शाश्वत् संबंध स्थापित किया और... **22** मई **1968**, योगीजी महाराज की **77** वीं जन्मजयंती पर तो श्री नंदाजी एवं गुजरात के तत्कालीन राज्यपाल की हाज़िरी में 'गुणातीत समाज' के प्रथम मंदिर में मूर्तिप्रतिष्ठा हुई थी!

इस मंदिर को बने पचास वर्ष पूरे होने आए हैं और... अब जीर्णोद्धार करवाने योग्य हो गया। पिछले वर्ष मार्च महीने में प.पू. गुरुजी के 79वें प्राकट्योत्सव निमित्त सभी स्वरूप दिल्ली मंदिर पधारे थे, उस दौरान सामूहिक बातचीत में गुरुहरि काकाजी-पप्पाजी महाराज का शताब्दी महोत्सव का चरण 2017 में कहाँ मनाया जाए, वह प्रश्न उठा। तब एक बहुत ही उत्तम एवं प्रॅक्टिल सोच उभर कर आई कि जैसे गुरुहरि काकाजी-पप्पाजी की जीवनशैली थी, यह उत्सव अत्यधिक भव्यता की बजाय **सादगी से शिविर के रूप में 2017 के दिसंबर में दिल्ली मंदिर के प्रांगण में** मनाया जाए। **हमारे माननीय प्रधानमंत्री का भी अनुरोध है कि हम बड़े-बड़े उत्सवों के लिए फ़िजूल खर्च न करें।** दूसरा, सांकरदा का मंदिर गुरुहरि काकाजी महाराज द्वारा बनवाया गया गुणातीत समाज का प्रथम मंदिर! तो, 2018 तक सांकरदा मंदिर का जीर्णोद्धार अथवा पुनः निर्माण जैसा एक ठोस कार्य करवा कर, 2018 के दिसंबर महीने में वहीं शताब्दी महोत्सव मनाएँ। वाक़ई, यह निर्णय आध्यात्मिक एवं व्यावहारिक दोनों दृष्टि से भक्तिपूर्ण है।

अभी थोड़े दिन पहले 15 मई से 18 तक **प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी** वीज़ा लेने के निमित्त दिल्ली मंदिर रुके थे। तब सांकरदा मंदिर में तन, मन, धन एवं आत्मा से सहयोग देकर, धन्य होने का मौका पाने की महत्ता दर्शाते वे बोल उठे–

काकाजी ने मुझे यह मंदिर बनवा दिया था...

दिल्ली का समाज तो गुरुहरि काकाजी का सर्जन! अतः 17 मई को ही प.पू. गुरुजी ने स्वयं एवं हरिभक्तों द्वारा सांकरदा मंदिर की नींव में रखी जाने वाली ईंट का पूजन करवा कर, प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी को प्रतीक रूप भेंट दी। बहुत हर्ष की बात है कि 23 मई 2017 को तिथि एवं दिनाँक के मुताबिक़ गुरुहरि योगीजी महाराज के 125 वें एवं प्रगट ब्रह्मस्वरूप हरिप्रसादस्वामिजी के 84वें प्राकट्य दिन, संतभगवंत प.पू. साहेबजी, प.पू. भरतभाई, प.पू. वशीभाई इत्यादि की निश्रा में सांकरदा मंदिर के पुनः निर्माण हेतु शिलान्यासविधि संपन्न हुई। भगवान स्वामिनारायण एवं गुणातीत स्वरूपों के श्रीचरणों में अंतर से प्रार्थना है कि गुणातीत समाज के सभी मुक्त हर प्रकार से सहयोग देकर, जल्द ही अगले वर्ष तक सांकरदा मंदिर पूर्ण करवा कर जीवन को कृतार्थ करें, ताकि गुरुहरि काकाजी द्वारा स्थापित गुणातीत समाज के प्रथम मंदिर की स्मृति चिरंजीव बनी रहे...

निमंत्रण

आइए, 12 जून 2017, सोमवार सायं 6:30 से रात्रि 9:15

प.पू. गुरुजी की निश्रा में – गुरुहरि काकाजी महाराज के 99वें प्राकट्योत्सव

एवं 'अनुष्ठान शिविर' की पूर्णाहुति के निमित्त

'ताड़देव'– अशोकविहार, श्री अक्षरपुरुषोत्तम स्वामिनारायण मंदिर में

इष्ट मित्रमण्डली सहित उपस्थित रह कर

दर्शन, सेवा, समागम और आमरस के प्रसाद का लाभ लेकर स्वयं को धन्य करें...

चातुर्मास के दौरान

(दिनांक 4 जुलाई, मंगलवार से 31 अक्तुबर, मंगलवार तक)

भगवान और संत की प्रसन्नता हेतु सभी सत्संगी निम्न नियमों का पालन करें।

1. सावन के महीने यानि– **10 जुलाई, सोमवार** से **21 अगस्त, सोमवार** तक एक बारी भोजन लें।
2. पूरे चातुर्मास या सावन के महीने दौरान प्रति माह मंदिर में टिफिन या कॅश द्वारा रसोई की सेवा दें।
3. **4 जुलाई, मंगलवार** - नियम की एकादशी, **15 अगस्त, मंगलवार** - जन्माष्टमी
   2 सितंबर, शनिवार - जलझीलनी एकादशी, **31 अक्तुबर, मंगलवार** - कार्तिक शुक्ला एकादशी
   इन चारों दिन व्रत रखें।
4. चातुर्मास दौरान यथाशक्ति 'महापूजा' करवाएं।
5. रोज़ सुबह या सायं **'स्वामिनारायण महामंत्र'** का अजपाजप करते हुए चालीस मिनिट वॉकिंग करें।
6. सावन महीने के दौरान–
   (अ) 'भगवत् कृपा' के पिछले अंकों में आई संतों - मुक्तों की ज्ञानवार्ता का क्रमशः नियमित रूप से रोज़ पाठ करते हुए उस पर मनन-चिंतन करें।
   (ब) 'गुजराती' भाषा जानते हों, वे **'स्वामी की बातें'** या हिन्दीभाषी मुक्त **'उपदेशामृत'** का पाठ करें।

❋ विशेष नियम ❋

चातुर्मास दौरान घर के (कुटुंब के) सभी सदस्य सुबह या दोपहर या सायं– जिस समय भी सभी को अनुकूल हो, तब रोज़ इकट्ठे बैठ कर भोजन करें और... भोजन शुरू करने से पहले सभी दो मिनिट 'प्रगट प्रभु' की स्मृति के साथ 'स्वामिनारायण' मंत्र की धुन करें।

व्रतोत्सवसूची

(1) दि. 28.5.2017, रविवार — ब्रह्मस्वरूप पप्पाजी महाराज का स्वधामगमन दिन
(2) दि. 1.6.2017, गुरुवार — ब्रह्मस्वरूप पप्पाजी महाराज का दृष्टा दिन
'गुणातीत ज्योत'– स्थापना दिन
(3) दि. 4.6.2017, रविवार — भगवान स्वामिनारायण की स्वधामगमन तिथि
(4) दि. 5.6.2017, सोमवार — भीम एकादशी, व्रत
(5) दि. 8.6.2017, गुरुवार — वटसावित्री
(6) दि. 12.6.2017, सोमवार— गुरुहरि प.पू. काकाजी महाराज का प्राकट्योत्सव एवं 'अनुष्ठान शिविर' की पूर्णाहुति
(सायं 6:30 से 9:15 मनाएंगे।)
(7) दि. 20.6.2017, मंगलवार — एकादशी, व्रत
(8) दि. 25.6.2017, रविवार — रथयात्रा
(9) **दि. 4.7.2017,मंगलवार — देवशयनी एकादशी, व्रत – चातुर्मास प्रारंभ**
(10) दि. 9.7.2017,रविवार— गुरुपूर्णिमा
(सुबह 8:45 से 10:15 ताड़देव मंदिर में मनाएंगे।
जो इस समय न आ पाएँ, वे दिन में किसी भी समय आ करके 'गुरुपूजन' कर सकेंगे।)

R.N.I. 28971/77 ***(Air Mail)***
'**Bhagwatkripa**' Bimonthly Magazine – Despatched on 15th of alternate months
If undelivered please return to :— *Printer, Publisher, Editor :* **SHRI PRABHAKER RAO *FOR* YOGI DIVINE SOCIETY- DELHI**
'Taad-dev', Kakaji Lane, Swaminarayan Marg, Ashok Vihar-III, Delhi-110 052 (India) Tel.: 4709 1281
Printed at : **D.K. FINE ART PRESS (P) LTD.,** A-6, Community Centre, Nimri Colony, DELHI-110 052

BJSM-2017 125 80 50 DELHI